	RAJESH	ANITA
जन्म तारीख	12/04/1985	10/09/1986
जन्म दिन	शुक्रवार	बुधवार
जन्म समय	12:45:00	08:36:00
इष्टकाल (घटी)	15:47:08	06:00:27
स्थान	mumbai/grantroad	jaipur/rajasthan
देश	India	India
अक्षांश	018:58:N	026:55:N
रेखांश	072:49:E	075:48:E
मध्य रेखांश	+05:30	+05:30
युद्ध/ग्रीष्म संस्कार	00/00	00/00
चंद्र राशी	धनु (सोना)	वृश्चिक (तांबा)
तिथी	कृष्ण - 8	शुक्ल - 7
नक्षत्र	उ.षाढा (1)	अनुराधा (2)
योग	सिद्ध	विष्कंभ
करण	कौलव	गर

वर्ण	क्षत्रिय	ब्राह्मण
तत्व	अग्नि	वारि
वश्य	मानव।चतु	कीट
वर्ग	ऊंदीर	सर्प
योनी	नकुल	मृग
गण	मनुष्य	देव
युंजा	अंत्य	मध्य
नाड़ी	अंत्य	मध्य

While all precautions have been taken for the accuracy of the complex calculations, the maker of these horoscopes makes no warranties, either expressed or implied.

|| Om Shri Ganeshaya Namah ||

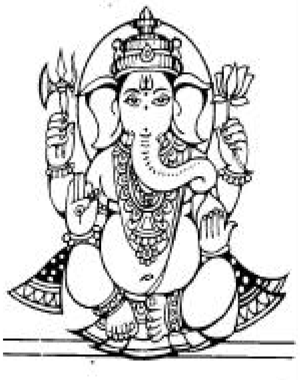

BEAWAR COMPUTER ACADEMY
(Horoscope Specialist from more than One Decade)
(1st Online Horoscope making Website of Rajasthan)
(New Year Search "VIVHA" Program, Possible date)

BURAD, Narsingh Street
BEAWAR-305 901 (RAJASTHAN-INDIA)
Website : www.onlinehoro.com
E-mail : burad@onlinehoro.com
+91-01462-254322, 09413041322, 09460042867

E-Kundli - 2009 (1.7.090608)

निरयन स्पष्ट ग्रह

ग्रह		राशी	अंश	नक्षत्र		रा स्वा	न स्वा	उ स्वा	अवस्था
लग्न		कर्क	03 :45 :11	पुष्य	1	चंद्र	शनि	शनि	-
रवि		मीन	28 :40 :45	रेवती	4	गुरु	बुध	शनि	बाल
चंद्र		धनु	29 :58 :06	उ.षाढा	1	गुरु	रवि	राहू	मृत
मंगल		मेष	26 :28 :57	भरणी	4	मंगल	शुक्र	केतु	मृत
बुध	(व)	मीन	14 :07 :55	उ.भाद्र	4	गुरु	शनि	राहू	युवा
गुरु		मकर	19 :05 :14	श्रवण	3	शनि	चंद्र	बुध	कुमार
शुक्र	(व)	मीन	15 :33 :40	उ.भाद्र	4	गुरु	शनि	गुरु	युवा
शनि	(व)	वृश्चिक	03 :27 :13	अनुराधा	1	मंगल	शनि	शनि	मृत
राहू	(व)	मेष	26 :08 :20	भरणी	4	मंगल	शुक्र	केतु	मृत
केतु	(व)	तुला	26 :08 :20	विशाखा	2	शुक्र	गुरु	केतु	मृत
हर्षल	(व)	वृश्चिक	24 :09 :41	ज्येष्ठा	3	मंगल	बुध	राहू	बाल
नेप.	(व)	धनु	09 :57 :18	मूल	3	गुरु	केतु	शनि	कुमार
प्लुटो	(व)	तुला	10 :01 :37	स्वाती	2	शुक्र	राहू	गुरु	कुमार
मांदी		वृषभ	10 :45 :53	रोहिणी	1	शुक्र	चंद्र	चंद्र	-
भा.-सहंम		मेष	05 :02 :31	अश्विनी	2	मंगल	केतु	मंगल	-

लग्न कुंडली

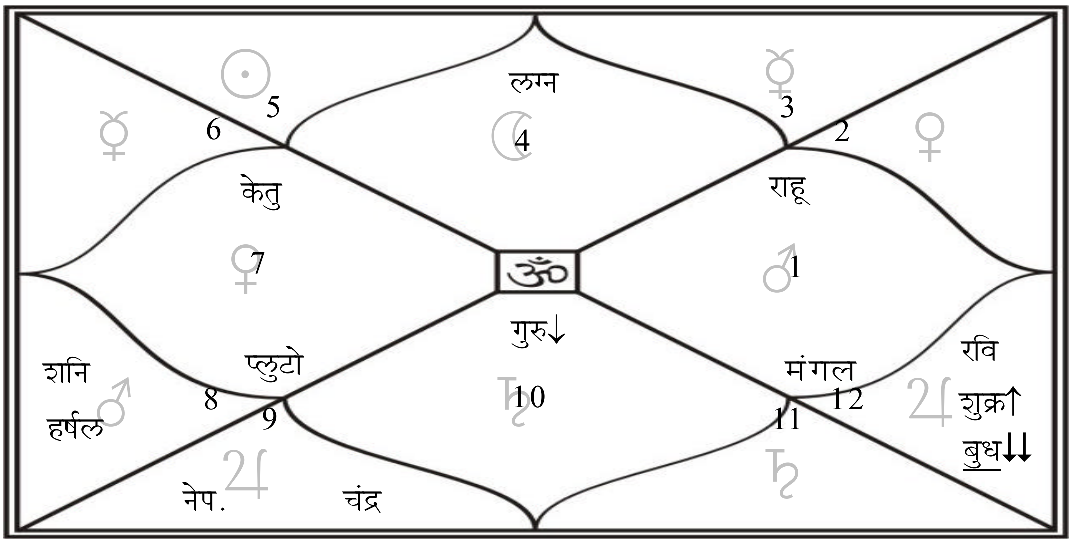

चलित कुंडली

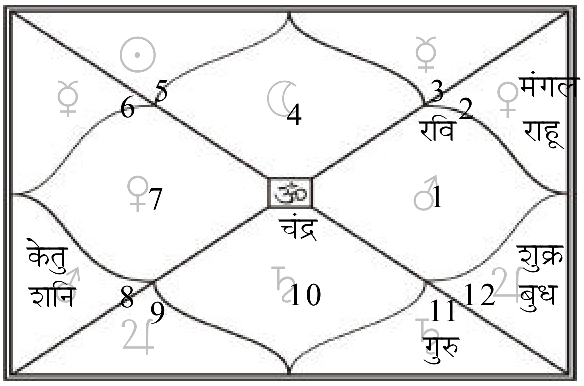

नवमांश कुंडली

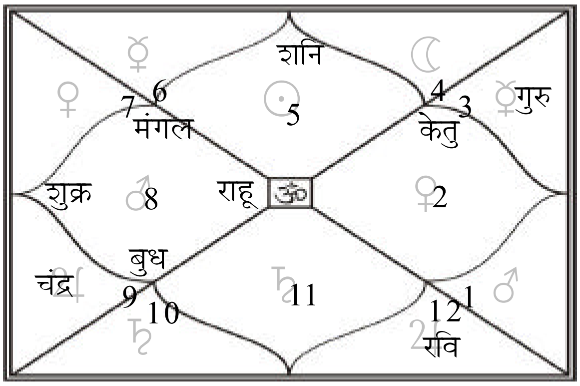

निरयन स्पष्ट ग्रह

ग्रह		राशी	अंश	नक्षत्र		रा स्वा	न स्वा	उ स्वा	अवस्था
लग्न		कन्या	25 :11 :02	चित्रा	1	बुध	मंगल	राहू	-
रवि		सिंह	23 :27 :25	पूर्वा-फा.	4	रवि	शुक्र	शनि	वृद्ध
चंद्र		वृश्चिक	07 :45 :29	अनुराधा	2	मंगल	शनि	केतु	वृद्ध
मंगल		धनु	23 :05 :16	पू.षाढा	3	गुरु	शुक्र	शनि	वृद्ध
बुध		सिंह	27 :25 :58	उत्तरा-फा.	1	रवि	रवि	चंद्र	मृत
गुरु	(व)	कुंभ	24 :17 :23	पू.भाद्र	2	शनि	गुरु	बुध	मृत
शुक्र		तुला	08 :38 :43	स्वाती	1	शुक्र	राहू	राहू	कुमार
शनि		वृश्चिक	10 :18 :47	अनुराधा	3	मंगल	शनि	शुक्र	वृद्ध
राहू	(व)	मीन	28 :48 :07	रेवती	4	गुरु	बुध	शनि	बाल
केतु	(व)	कन्या	28 :48 :07	चित्रा	2	बुध	मंगल	शनि	बाल
हर्षल		वृश्चिक	24 :45 :45	ज्येष्ठा	3	मंगल	बुध	राहू	बाल
नेप.	(व)	धनु	09 :22 :32	मूल	3	गुरु	केतु	शनि	कुमार
प्लुटो		तुला	11 :45 :05	स्वाती	2	शुक्र	राहू	शनि	कुमार
मांदी		वृश्चिक	09 :16 :45	अनुराधा	2	मंगल	शनि	शुक्र	-
भा.-सहंम		धनु	09 :29 :06	मूल	3	गुरु	केतु	शनि	-

मंगलिक

लग्न कुंडली

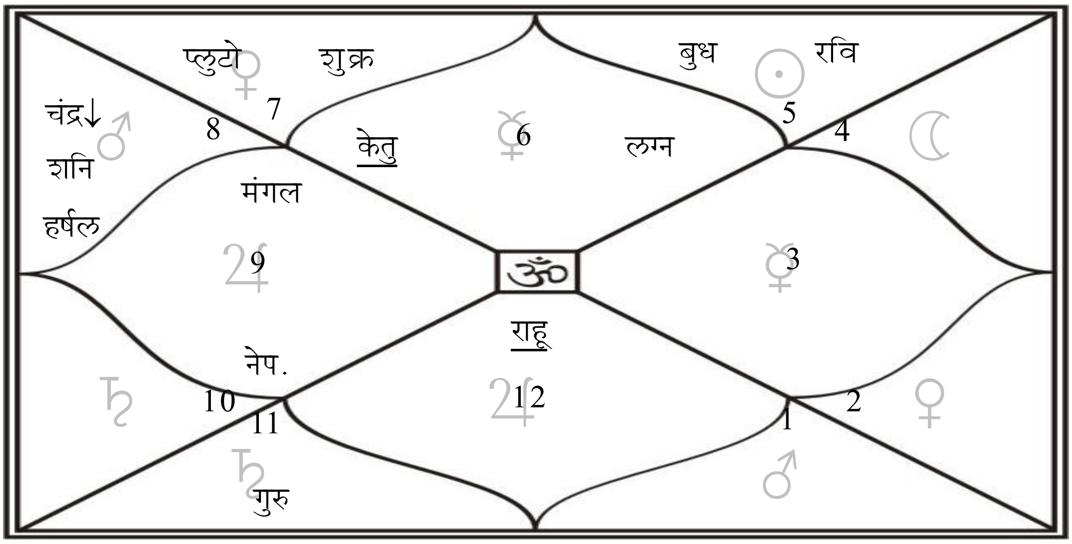

चलित कुंडली

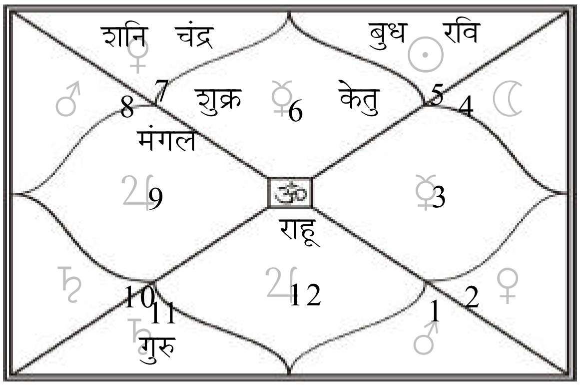

नवमांश कुंडली

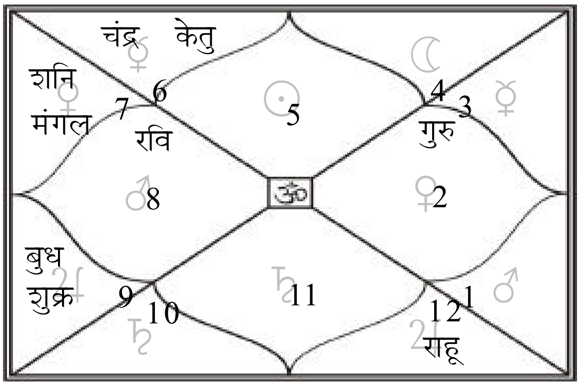

नर और नारी के गुणों का वर्णन

वर्ण 0

यह वर्ण मिलन नर और नारी के व्यक्तित्व अथवा प्रकृति और जाति की परंपरा अनुसार साम्यता दर्शाता है। यदि नर का वर्ण क्षत्रिय और नारी का ब्राह्मण वर्ण हो तो शून्य गुण मिलते हैं। यहाँ दोनो के व्यक्तित्व और प्रकृति की साम्यता कम होनेसे वर्ण मिलन वैवाहिक जीवन के बंधन के लिये उचित नहीं है।

वश्य 50

यह वश्य मिलन नर और नारी के बीच आकर्षण और आधीनता दर्शाता है। यदि नर का वश्य मानव हो ओर नारीका वश्य कीट हो तो 1 गुण प्राप्त होता हैं। यह विवाह बंधन के लिये मध्यम श्रेणी का होने से दोनो के बीच मध्यम आकर्षण और आधीनता दर्शाता है।

तारा 50

यह तारा मिलन नर और नारी की आयु और वैवाहिक जीवन मे मधुरता या वियोग दर्शाता है. यदि नर की तारा मैत्र हो और नारीकी तारा विपत हो तो आधा गुण प्राप्त होता है। यह नर और नारी के बीच मधुरता और वियोग मध्यम प्राकार का दर्शाता है। यह विवाह बंधन के लिये मध्यम है, अशुभ नहीं है।

योनि 50

यह योनि मिलन नर और नारी के यौन संबंध की साम्यता और शारीरिक संतोष दर्शाती है। यदि नर की योनि नकुल और नारी की योनि मृग हो तो 2 गुण प्राप्त होते हैं। यह नर और नारी के यौन संबंधमे शारीरिक असंतोष दर्शाता है, अतः विवाह बंधन के लिए उचित नहीं है फिरभी अन्य गुण मिलने पर काम चलाया जा सकता है ।

ग्रह मैत्री 100

यह ग्रह मैत्री नर और नारी के बीच परस्पर मित्रता समता या शत्रुता दर्शाती है। यदि नर का राशीश गुरु और नारी का राशीश मंगल हो तो दोनो ग्रह परस्पर मित्र होने के कारण ये वैवाहीक जीवन में मित्रता एवं मधुरता बनाते हैं, यह उत्तम हैं।

गण 83.33

यह गण मिलन नर और नारी के प्रकृति की एक रूपता के लिए देखा जाता हैं। यदि नर का गण मनुष्य हो और नारी का गण देव हो तो यह दोनो के स्वभाव की साम्यता दर्शाता है, अतः विवाह बंधनके लिये उत्तम है।

भकूट 100

यह भकूट मेल नर और नारी के बीच कितना लेन देन है यह दर्शाता है । यहाँ नर की राशि धनु है और नारी की राशि वृश्चिक हैं। यहाँ दोनो के बीच लेन देन अति उत्तम रहने के कारण विवाह बंधन के लिए अत्युत्तम है।

नाडी 100

यह नाडी मिलन नर और नारी के शरीर में स्थित त्रिदोष (कफ, वात और पित्त) की साम्यता दर्शाती हैं और संतान सुख में बाधा या अनुकूलता का निर्देश करती है। यदि नरकी नाडी अंत्य और नारी की नाडी मध्य हो तो 8 गुण प्राप्त होते हैं। यदि कुंडली में अन्य कोई दोष (पुत्र स्थान के विषय में) न हो तो, यहाँ संतान सुख प्राप्त होने में सरलता और अनुकूलता रहती है। अतः विवाह बंधनके लिये उत्तम है।

गुणा वर्णन टेबल

गुणा	युवक	युवती	टोटल	प्राप्त
वर्ण	क्षत्रिय	ब्राह्मण	1	0
वश्य	मानव	कीट	2	1
तारा	मैत्र	विपत	3	1 .5
योनि	नकुल	मृग	4	2
ग्रह मैत्री	गुरु	मंगल	5	5
गण	मनुष्य	देव	6	5
भकूट	धनु	वृश्चिक	7	7
नाडी	अंत्य	मध्य	8	8
	उ.षाढा (1)	अनुराधा (2)		
कुल प्राप्त गुण			36	29 .5
गुणा प्रतिशत				81 %

गुण विचार

युवती की कुंडली में चतुर्थ स्थान में मंगल होने से मंगलदोष है लेकिन युवक की कुंडली मे मंगल न होने से यह लग्न जीवन के बंधन केलिए योग्य नहीं है।

आपके गुण 18 .00 से अधिक हैं लेकिन युवती की कुंडली में मंगलदोष होने से यह लग्न जीवन के बंधन केलिए योग्य नहीं है।

Note : Above Conclusions are based on Avakhada Chakra matching and mangal dosh considerations only.